प्रकाशन तिथि : 01 मई, 2023
प्रेषण तिथि : 04 मई, 2023

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 27 | अंक 04 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

सफलता असफलता की बात न करते हुए अपनी गंभीरता को जांचें: संरक्षक श्री

(बाड़मेर के आलोक आश्रम में हुआ क्षत्रिय शिक्षक स्नेहमिलन का आयोजन)

यह जो क्षत्रिय शिक्षक स्नेहमिलन कार्यक्रम रखा गया, इसमें सफलता-असफलता की बात ना करते हुए यह मानना चाहिए कि यह पहल अद्भुत है। कुछ कमियां हर कार्य में रहती है, लेकिन अपने आपको जांचें कि हम कितने गंभीर हैं। हमको यदि आगे बढ़ना है तो आत्मचिंतन अवश्य करना है। छात्रवृत्तियों, आरक्षण के प्रावधान, संवैधानिक प्रावधान आदि के बारे में अनेक बातें यहां आपको बताई गई। शिक्षक होने के नाते आपको इन बातों को लेकर जागरूक भी होना चाहिए। अब तक नहीं रहे हों तो कोई बात नहीं, लेकिन आज के बाद यह सारी बातें आप लोगों को जाननी हैं और समाज को बतानी है। तब ही हम कह सकेंगे कि हम जागरूक हैं। बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में आयोजित शिक्षक सम्मेलन को संबोधित करते हुए माननीय संरक्षक महोदय ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने समाज में राजनीतिक जागृति को आवश्यक बताते हुए कहा कि आज के समय में सरकार तब तक सुनती नहीं है जब तक उसको अपने वोट छिटकते नजर ना आए। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

लोकतंत्र के सच्चे नागरिक बनें: सरवड़ी

(जालौर में आयोजित हुआ श्री प्रताप फाउंडेशन का किसान सम्मेलन)

हमने यहां हमारी मांगों की बात की और आजकल जैसा ट्रेंड है, हर व्यक्ति, अपने लिए क्या लाभदायक है, उस हिसाब से ही सोचता है। केवल किसान नहीं, कर्मचारी भी, मजदूर भी, नेता भी, कौन सा ऐसा वर्ग है जो अपने खुद के हित की बात नहीं सोचता। इसलिए हमने भी सोचा कि किसान के रूप में हमारी क्या-क्या मांगे हो सकती हैं। स्वामीनाथन कमेटी की सिफारिशों के अनुसार न्यूनतम समर्थन मूल्य तय करने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय बैंकों से किसानों को मिला ऋण भी माफ होना चाहिए। ये सभी मांगे उचित हैं लेकिन केवल अपनी मांगों की बात तो हर स्वार्थी व्यक्ति करता है। क्या हम स्वार्थी बने रहेंगे? दायित्व बोध की बात कहां गई? हमको अपना दायित्व भी संभालना है। आज जो लोकतंत्र की शासन प्रणाली है, वह अच्छी से अच्छी शासन प्रणाली मानी जाती है। फिर भी भारत में इंसानियत क्यों नहीं पनप रही, दायित्व बोध क्यों नहीं पनप रहा, कर्तव्य की बात क्यों नहीं आगे आ रही है, अधिकारों की बात क्यों आगे आती है, इस पर जरा विचार करें। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

सामाजिक पुकार का प्रत्युत्तर देना हमारा नैतिक कर्त्तव्य: संघप्रमुख श्री

(माननीय संघप्रमुख श्री का दक्षिण भारत प्रवास-बेंगलुरू, चित्रदुर्गा, चेन्नई, विजयवाड़ा और हैदराबाद में स्नेहमिलन संपन्न)

दक्षिण भारत के इस प्रवास के दौरान आप सबका उत्साह देखते ही बनता है। ज्यों ही एक कार्यक्रम पूरा होता है, दूसरे कार्यक्रम की भूमिका शुरू हो जाती है। केवल राजस्थान के प्रवासी ही नहीं, बल्कि स्थानीय समाजबंधु भी उत्साह के साथ संघ का स्वागत कर रहे हैं। इस उत्साह को देखकर संघ गदगद है। आप लोगों के उत्साह के सामने कार्यक्रम का यह स्थान भी छोटा पड़ गया है। श्री क्षत्रिय युवक संघ आपसे यही निवेदन करता है कि संघ ही नहीं, जब भी कोई सामाजिक भाव वाला व्यक्ति आपको पुकारे तो इसी प्रकार से उस स्नेह को देने के लिए, इस जातीय भाव को दिखाने के लिए और इस जाति स्वरूपा मां का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए हम पलक-पांवड़े बिछा दें, यही हमारा नैतिक कर्तव्य है। प्रत्येक राजपूत, जिसके हृदय में जातीय भाव है, उसके दिल में पूज्य तनसिंह जी की छवि बसी हुई है और हममें समाज के प्रति जो पीड़ा और भाव जागृत हुआ है, यह पूज्य तनसिंह की ही पीड़ा का भाव है। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने दक्षिण भारत प्रवास के दौरान 13 अप्रैल को बेंगलुरु के राणासिंहपेट स्थित चामुंडा माता मंदिर में आयोजित स्नेहमिलन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि हम धन कमाएं, हम राजनीति में अपने आप को मजबूत बनाएं, हम प्रशासनिक सेवाओं में अपनी संख्या बढ़ाएं, यह सब हमें करना चाहिए। इसमें हमारा, हमारे परिवार का, हमारे मित्रों का हित हो रहा है, लेकिन क्या उसमें क्षत्रिय का हित हो रहा है? क्षत्रिय का हित तो केवल क्षात्रधर्म के पालन में ही है, इसलिए संघ हमें क्षात्रधर्म के पालन के लिए तैयार कर रहा है। संघप्रमुख श्री ने पारिवारिक भाव का महत्त्व बताते हुए कहा कि परिवार प्रेम, त्याग और सहनशक्ति से बनता है। संघ भी समाज को अपना परिवार मानता है और इसीलिए संघ सभी प्रकार के विरोध को सहन करता है, उस पर किसी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं देता, बल्कि सभी विरोधों को सहन कर समाज रूपी मां की सेवा के अपने कर्त्तव्यमार्ग पर डटा रहता है। इससे पूर्व 13 अप्रैल को ही चित्रदुर्गा स्थित अल्लामा प्रभु सभा भवन मुरघा मठ में भी संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। यहां उपस्थित समाजबंधुओं से उन्होंने कहा कि पूज्य तनसिंह जी केवल स्वयं ही आगे नहीं बढ़े, बल्कि उनके साथ रहने वाले जो लोग थे उनको भी आगे बढ़ाने का पूरा प्रयास किया। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त विशेष शाखाओं का आयोजन

चित्तौड़गढ़ प्रांत के निंबाहेड़ा मंडल में पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में साप्ताहिक रविवारीय विशेष शाखा आसावरा माताजी मंदिर परिसर बोहेड़ा में आयोजित की गई जिसमें स्वयंसेवकों के साथ स्थानीय समाज बंधु सम्मिलित हुए। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली के निर्देशन में यज्ञ किया गया। संघ परिचय स्वयंसेवक जोगेंद्र सिंह छोटा खेड़ा द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के दौरान संघ शक्ति, पथप्रेरक के सदस्य बनाने के साथ ही संघ साहित्य एवं परमहंस स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी कृत यथार्थ गीता सभी उपस्थित जनों को भेंट की गई। आगामी 8 मई को डूंगला रावतपुरा में रक्तदान शिविर व 18 जून को झाला मन्ना के बलिदान दिवस को भव्य रूप से मनाने की रूपरेखा

तैयार की गई। जयपुर में होने वाले आगामी उच्च प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने हेतु स्वयंसेवकों को प्रोत्साहित किया गया। संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा, भंवर सिंह बेमला एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। 23 अप्रैल को ही डूंगरपुर-बांसवाड़ा प्रांत के आसपुर मंडल में रावला परिसर वालाई में भी विशेष साप्ताहिक शाखा का आयोजन हुआ जिसमें स्वयंसेवक व स्थानीय समाजबंधु उपस्थित रहे। इससे पूर्व 16 अप्रैल को प्रातः 11 बजे बांसवाड़ा जिले की घाटोल तहसील के करगचिया गांव के रावला परिसर में कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला ने पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के बारे में उपस्थित समाजबंधुओं को जानकारी दी। कार्यक्रम में गुमान

सिंह वलाई, हनुमंत सिंह सज्जन सिंह जी का गडा, लाखन सिंह लाम्बापारडा, शम्भु सिंह लाम्बापारडा एवं हरि सिंह काकाजी का गडा सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। इसी दिन दोपहर 3 बजे घाटोल तहसील के ही देवदा गांव में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम के पश्चात संभाग प्रमुख अन्य स्वयंसेवकों के साथ वयोवृद्ध स्वयंसेवक कल्याण सिंह पड़ौली राठौड़ से भेंट करने उनके निवास पर पहुंचे एवं उनकी स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्राप्त की। जैसलमेर संभाग के चांधन प्रांत के मूलाना गांव स्थित मां हरसिद्धि मंदिर में 13 अप्रैल, 18 अप्रैल और 25 अप्रैल को पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त यज्ञ किया गया। इस दौरान प्रांत प्रमुख उमेद सिंह बडोडागांव सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

राजपूत शिक्षा कोष द्वारा कॅरियर गाइडेंस कार्यशाला का आयोजन

राजपूत शिक्षा कोष के तत्वावधान में जोधपुर स्थित हनवंत गार्डन में एक दिवसीय कैरियर गाइडेंस कार्यशाला का आयोजन 23 अप्रैल को किया गया। आईएएस अधिकारी शक्ति सिंह राठौड़ ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि आज का समय प्रतियोगिता का समय है और इसमें वही सफल होगा जो कड़ी मेहनत करेगा। विद्यार्थी को अध्ययन काल के दौरान ही अपना लक्ष्य निश्चित कर लेना चाहिए और उसे प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयत्शील रहना चाहिए। उन्होंने युवाओं के मार्गदर्शन के लिए ऐसी कार्यशालाओं के निरंतर आयोजन की आवश्यकता जताई। हनवंत एजुकेशन सोसाइटी के अध्यक्ष डॉ. शिव सिंह राठौड़ ने कहा कि विद्यार्थी अपना आकलन स्वयं करें और अपनी कमजोरियों को पहचान कर उन्हें दूर करें तो उन्हें सफलता अवश्य मिलेगी। पूर्व राज्यसभा सांसद डॉ नारायण सिंह माणकलाव ने कहा कि राजपूत शिक्षा कोष द्वारा प्रतिभावान विद्यार्थियों को आगे लाने के लिए विभिन्न परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है, साथ ही प्रतिभाशाली एवं पात्र विद्यार्थियों को आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया जाता है। चार सत्रों में संपन्न कार्यशाला के दौरान कोष के अध्यक्ष व पूर्व डीआईजी डॉ बहादुर सिंह राठौड़, प्रोफेसर डीएस खींची, श्याम सिंह सजाडा, इग्नू क्षेत्रीय निदेशक डॉ अजय वर्धन, शक्ति सिंह शेखावत, डॉ उम्मेद सिंह सोढा, प्रकाश सिंह राठौड़, वीरेंद्र सिंह शेखावत, पूर्व कुलपति डॉ जबर सिंह सोलंकी व सुरेंद्र सिंह शेखावत ने युवाओं को कैरियर संबंधी मार्गदर्शन दिया एवं उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया।

दत्ताणी और जावाल में एसकेपीएफ की बैठकें संपन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ के आनुषंगिक संगठन श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की एक कार्यविस्तार बैठक सिरोही जिले में रेवदर क्षेत्र के दत्ताणी गांव में 23 अप्रैल को संपन्न हुई जिसमें फाउंडेशन की तहसील स्तरीय कार्ययोजना बनाई गई। 23 अप्रैल को ही सिरोही जिले के जावाल कस्बे में व्यापारियों की एक बैठक भी श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा आयोजित की गई जिसमें क्षेत्र के राजपूत व्यापारियों में आपसी सहयोग व समन्वय विकसित करने संबंधी चर्चा की गई। इन बैठकों में श्री क्षत्रिय युवक संघ के सिरोही प्रांत प्रमुख ईश्वर सिंह सरण का खेड़ा, दिग्विजय सिंह कोलीवाड़ा, चंद्रवीर सिंह लूणोल, मदन सिंह देलदर, भागीरथ सिंह लूणोल, दीपेंद्र सिंह पीथापुरा, भवानी सिंह भटाना, शक्ति सिंह मांडानी, नारायण सिंह देलदर, सुमेर सिंह उथमण, कृष्णपाल सिंह केसुआ, देवराज सिंह मांडानी, महिपाल सिंह डाक आदि स्थानीय सहयोगी एवं समाजबंधु उपस्थित रहे।

आठ क्षत्रिय लेखकों की कृतियों का होगा प्रकाशन

राजस्थान सरकार की साहित्यिक स्वायत्तशासी संस्था राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर ने 'पांडुलिपि प्रकाशन सहयोग योजना' के अंतर्गत प्रदेश के साहित्यकारों की पांडुलिपियां स्वीकृत की हैं। जिसमें क्षत्रिय समाज के आठ कलमकारों की पुस्तकों को अनुदान हेतु चयनित किया गया है। इसके तहत बाड़मेर के वरिष्ठ साहित्यकार दीपसिंह रणधा डिंगल रसावल की गद्य कृति 'बातां रा गैघट्ट', संग्राम सिंह सचियापुरा कृत 'किरत्यां साम्ही कोटड़ी', महेन्द्रसिंह छायण कृत 'कीरत-कळश', मानसिंह भुरटिया कृत 'टाबरिया म्हैं टाबरिया', नाथूसिंह खिरजां खास कृत 'पिणघट', निर्मला कंवर जोधपुर कृत 'सोनल वरणी संस्कृति', डॉ अनुश्री कंवर उदयपुर कृत 'धौळां री लाज', संतोष कंवर बरड़वा कृत 'सबद भरै है साख' एवं शैलकंवर उदयपुर कृत 'पद्मायण' पुस्तकों को अकादमी द्वारा नियमानुसार प्रकाशनार्थ अनुदान प्रदान किया गया है। उपरोक्त सभी रचनाकार समाज के विशुद्ध साहित्यिक व्हाट्सएप ग्रुप 'कलम अर कटार' से जुड़े हुए हैं एवं हिंदी व राजस्थानी जगत में अपनी प्रखर मेधा व प्रतिभा से उत्कृष्ट सृजन करके समाज को गौरवान्वित कर रहे हैं।

त्रिलोकपुरा (सीकर) में माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न

शेखावाटी संभाग में सीकर जिले के त्रिलोकपुरा गांव में श्री क्षत्रिय युवक संघ का माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर 13 से 19 अप्रैल तक आयोजित हुआ। संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि इस शिविर में बौद्धिक चर्चा, खेल, प्रार्थना, सहगीत आदि विभिन्न गतिविधियों द्वारा आपके जीवन में क्षत्रियोचित संस्कारों का बीजारोपण किया जा रहा है। संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली के माध्यम से आपको जो शिक्षण मिल रहा है उसकी सार्थकता तभी है जब आप उसे अपने जीवन में उतारें और समाज व राष्ट्र के एक जिम्मेदार नागरिक बनकर अपने कर्तव्य का पालन करें। जब भी संघ और समाज आपका आह्वान करें, तब आप अपने आप को समर्पित करने को तत्पर हों, ऐसा सामाजिक भाव संघ आपमें विकसित करना चाहता है। उन्होंने कहा कि यहां मिला हुआ शिक्षण आपके स्वयं के विकास में तो सहायक बनेगा ही, साथ ही आपके माध्यम से समाज और राष्ट्र के भविष्य को भी प्रभावित करेगा। इसलिए पूरी तरह से जागृत होकर यहां की प्रत्येक गतिविधि में पूरे मनोयोग से भाग लें। यहां से जाने के बाद भी सूर्योदय से पूर्व उठना, वरिष्ठजनों का सम्मान करना, ईश वंदना आदि आदतों को जारी रखें तभी आपका जीवन परिवर्तित होगा और तभी संघ का संदेश आपके माध्यम से समाज में आगे पहुंचेगा। शिविर में सीकर, नागौर, बीकानेर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, जोधपुर आदि जिलों के 100 युवाओं ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का माध्यमिक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के दौरान युवाओं को संघदर्शन के विभिन्न विषयों से परिचित कराया गया। त्रिलोकपुरा के महावीर सिंह, विजय सिंह व जय सिंह ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। प्रांतप्रमुख जुगराज सिंह जुलियासर सहयोगियों सहित शिविर में उपस्थित रहे।

भटवाड़ा खुर्द (चित्तौड़गढ़) में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न

चित्तौड़गढ़ के भटवाड़ा खुर्द गांव स्थित रघुकुल फार्म हाउस में श्री क्षत्रिय युवक संघ का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 13 से 16 अप्रैल तक आयोजित हुआ। संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि हमारे पूर्वजों ने त्यागमय जीवन जीते हुए प्राणीमात्र की सेवा में अपने आपको समर्पित कर दिया। उन्हीं की भांति हम भी अपने स्वधर्म का पालन करें, इसी का शिक्षण संघ हमें दे रहा है। उन्होंने कहा कि नियमित और निरंतर अभ्यास से ही संघ द्वारा दिए गए शिक्षण को जीवन में उतारा जा सकता है। इसलिए शाखा एवं शिविर के माध्यम से निरंतर संघ के संपर्क में बने रहें। शिविर में चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, उदयपुर, राजसमंद, अजमेर आदि जिलों के 140 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के विदाई कार्यक्रम के दौरान वरिष्ठ स्वयंसेवक बालू सिंह जगपुरा, भवानी सिंह मुंगेरिया, पूर्व जिला प्रमुख भैरो सिंह चौहान, पूर्व प्रधान शक्ति सिंह मुरलिया, पूर्व खेल अधिकारी अनिरुद्ध सिंह बानीणा सहित अनेक गणमान्य समाज बंधु उपस्थित रहे।

तनायन में जोधपुर संभाग का स्नेहमिलन संपन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ के जोधपुर संभाग का संभागीय स्नेहमिलन जोधपुर शहर स्थित तनायन कार्यालय में 15 अप्रैल को सम्पन्न हुआ, जिसमें पिछले छह माह में संभाग में हुए कार्यों की समीक्षा की गई, साथ ही मई माह में होने वाले उच्च प्रशिक्षण शिविर में आने वाले शिविरार्थियों से संपर्क करने के लिए लक्ष्य दिए गए। बैठक में शताब्दी वर्ष के निमित्त संभाग में होने वाले कार्यक्रमों की योजना भी बनाई गई। अगले सत्र में संभाग में लगने वाले बालक व बालिका शिविर, सभी प्रांतों में प्रांतीय स्नेहमिलन का आयोजन, संघशक्ति-पथप्रेरक सदस्यता अभियान आदि विभिन्न बिंदुओं पर भी चर्चा हुई एवं तदनुरूप दायित्व सौंपे गए। कार्यक्रम में केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा व संभाग प्रमुख चंद्रवीर सिंह देणोक सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

उत्तर गुजरात संभाग की संभागीय बैठक संपन्न

उत्तर गुजरात संभाग की संभागीय बैठक 16 अप्रैल को भैसाना गांव में संपन्न हुई जिसमें बनासकांठा प्रांत, मेहसाना प्रांत, अखल्ली प्रांत और पाटन प्रांत के स्वयंसेवकों और सहयोगियों ने भाग लिया। यज्ञ के साथ प्रारंभ कार्यक्रम में संभाग प्रमुख विक्रम सिंह कमाना ने बैठक के उद्देश्य के बारे में बताया एवं संभाग में अब तक हुए कार्यों की जानकारी देते हुए आगे होने वाले कार्यों पर चर्चा की। उन्होंने आगामी उच्च प्रशिक्षण शिविर हेतु योग्य शिविरार्थियों से संपर्क करने की बात कही। अजीत सिंह कुणघेर द्वारा पूज्य श्री तनसिंह जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त होने वाले कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से बताया गया। महेशसिंह जगन्नाथपुरा द्वारा संघ के सामाजिक पहलू पर चर्चा की गई। बैठक में सभी प्रांत प्रमुखों द्वारा अपने अपने प्रांत की कार्ययोजना बताई गई तथा तदनुरूप दायित्व भी सौंपे गए। कार्यक्रम के दौरान सहभोज भी रखा गया। वनराज सिंह भैसाना और राजेंद्र सिंह भैसाना ने व्यवस्था में सहयोग किया।

भावनगर के विभिन्न गांवों में संपर्क यात्रा का आयोजन

गुजरात में गोहिलवाड़ संभाग के भावनगर प्रांत में 17 अप्रैल को पूज्य श्री तनसिंहजी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त विभिन्न गांवों में संपर्क यात्रा का आयोजन किया गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक बलवंत सिंह पांची ने सहयोगियों के साथ मिलकर प्रांत के देवरिया, रंघोला, मोटा उमरड़ा और मांडवा गांवों की यात्रा की और पूज्य श्री तनसिंह जी एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारे में ग्रामवासियों को जानकारी देकर उन्हें दिल्ली में होने वाले पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह के लिए आमंत्रित किया। यात्रा के दौरान मंगलसिंह धोलेरा, अजीत सिंह थलसर साथ रहे। वीरमदेव सिंह देवरिया (गृहपति राजपूत बोर्डिंग), अजीतसिंह रंघोला और महेंद्रसिंह मोटा उमरडा ने व्यवस्था में सहयोग किया।

संपादकीय

आदर्श और यथार्थ का प्रश्न

आदर्श और यथार्थ का प्रश्न किसी भी ऐसे व्यक्ति और समाज के सामने आता ही है जो विकास या उन्नति के पथ पर अपने कदम बढ़ाता है, या बढ़ाने की चाह रखता है। यह प्रश्न तो केवल उन्हीं के सामने नहीं आता जो येन-केन-प्रकारेण जीवन निर्वाह और भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति को ही एकमात्र सत्य मानकर उसी के लिए अपना सर्वस्व लगाए रखते हैं और उससे इतर सोचने की क्षमता अपने में विकसित ही नहीं कर पाते। लेकिन जो आगे बढ़ने को उत्सुक है, जो विकसित होने की चाह रखता है, उसे अपने लिए कुछ आदर्शों का चयन करना होता है जिनकी ओर बढ़ने में उसका विकास निहित हो। ये आदर्श हमारे वर्तमान यथार्थ से बहुत दूर होते हैं और उनकी ओर बढ़ते हुए जब हम उन तक पहुंच जाते हैं तब वे ही आदर्श हमारे लिए यथार्थ बन जाते हैं और जिसे हम पहले यथार्थ समझते थे वह तब केवल एक मील के पत्थर की भूमिका में आ जाता है। इसी का दूसरा पहलू यह भी है कि जो अभी तक उस आदर्श की ओर चले ही नहीं और हमारे लिए मील के पत्थर बन चुके पूर्ववत यथार्थ के धरातल पर ही खड़े हैं, उन्हें वह आदर्श एक भ्रम अथवा कल्पना ही दृष्टिगत होता है और वे उसकी सत्यता को स्वीकार नहीं कर पाते। वे उस आदर्श को नकारते हैं और तब आदर्श को यथार्थ कर चुके व्यक्ति के लिए दूसरा संघर्ष का क्षेत्र उत्पन्न होता है जिसमें उसे अपने आदर्शों की सत्यता अन्यों के सामने भी सिद्ध करनी पड़ती है ताकि वे भी उस आदर्श को प्राप्त करने की ओर आगे बढ़ें, जिसे उसने प्राप्त किया है। लेकिन आदर्श से यथार्थ की यह यात्रा बहुत लंबी होती है और इस यात्रा के दौरान ही आदर्श और यथार्थ का प्रश्न चुनौती बनकर हमारे सामने आता है। यह चुनौती हमारे आदर्शों की सत्यता और हमारे संकल्प की प्रबलता, दोनों का परीक्षण करती है। इस चुनौती से जो संघर्ष किया जाता है उससे पार होकर ही उन जीवन सत्यों से भी साक्षात्कार संभव होता है जिनके आधार पर किसी महान कौम और महान संस्कृति का जीवन विकसित होता है।

उपरोक्त वर्णन आदर्श और यथार्थ के प्रश्न का व्यापक चित्रण है, किंतु हम इसे समाज की वर्तमान स्थिति की सापेक्षता के साथ देखें तो अधिक स्पष्टता से इसे समझना संभव होगा। क्षत्रिय कौम ने मात्र अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जीवन न जी कर प्राणीमात्र के रक्षण के अपने स्वधर्म को अपना आदर्श बनाया। इस आदर्श की पालना में हमारे समाज ने महानता के जिन शिखरों को छुआ, वे सामान्य व्यक्तियों और अन्य समाजों को कल्पना ही लगते हैं और इसीलिए वे सहज ईर्ष्यावश उस महानता को नकारने का प्रयत्न भी करते हैं। आत्मसम्मान के लिए जौहर की अग्नि में स्नान करना, निश्चित मृत्यु को भी उमंगपूर्वक स्वीकार करते हुए शाका करना, गाय और कबूतर जैसे प्राणियों के लिए भी अपने जीवन तक को अर्पित करने को तत्पर हो जाना, मातृभूमि के सम्मान के लिए मुट्ठीभर साथियों के साथ विशाल साम्राज्यों से टक्कर लेने जैसे वीरता, शौर्य और त्याग के आदर्श हों या समाज में प्रचलित पाखण्ड और भेदभाव से मुक्ति दिलाने के लिए सत्य के प्रकाश को समाज में प्रसारित करने की साधना और भक्ति के आदर्श हों, हमारे पूर्वजों ने इन आदर्शों को सत्य करके ही हमारी कौम की महानता को सातत्य प्रदान किया। ऐसे महान इतिहास और महान परंपरा के प्रति अन्यों की ईर्ष्या स्वाभाविक सी है। लेकिन हमारे समाज के लिए वास्तविक प्रश्न इस ईर्ष्या का नहीं है, क्योंकि यह ईर्ष्या केवल इसी बात का प्रकटीकरण है कि वे भी इसी महानता को धारण करना चाहते हैं लेकिन किसी कारणवश कर नहीं पा रहे हैं। यह ईर्ष्या बचकानी है जिसे हमारा अहंकार घृणा में भी बदल सकता है, तो हमारा प्रेम सम्मान में भी बदल सकता है। यही वह संघर्ष का दूसरा क्षेत्र है जिसमें हमारे समाज को अपने आदर्शों पर दृढ़ रहते हुए अन्यों को भी इन आदर्शों की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करना है।

लेकिन इस दूसरे संघर्ष-क्षेत्र में उतरने से पहले हमारे सामने अपने आदर्श और यथार्थ के प्रश्न को हल करने का पहला संघर्ष-क्षेत्र विद्यमान है जिसमें हमें हमारे यथार्थ की वास्तविकता को स्वीकार करते हुए अपने आदर्शों का चयन करके उनकी ओर बढ़ना है। हमें चिंतन करना होगा कि क्या आज हमारे ही समाज में त्याग और बलिदान के हमारे शाश्वत आदर्शों को अव्यावहारिक बताकर अस्वीकार नहीं किया जा रहा? क्या वर्तमान युग के यथार्थ के नाम पर अन्यों के लिए मर-मिटने वाले क्षात्रधर्म की परिभाषा को नकारने वाले लोग हमारे बीच नहीं हैं? क्या आज इन आदर्शों के धारक तैयार करने के कार्य को सतयुगी विचार बताकर खारिज करने वाले हमारे समाज में नहीं है? इन प्रश्नों के उत्तर यदि हां में हैं तो सर्वप्रथम हमें अपने ही समाज में क्षात्रधर्म के शाश्वत आदर्शों को पुनर्प्रतिष्ठित करना होगा। इसका एकमात्र उपाय इन आदर्शों को अपने आचरण का अंग बनाकर, उनके अनुरूप जीवन जीकर अन्यों को भी अपना जीवन वैसा बनाने के लिए प्रेरित करना है। श्री क्षत्रिय युवक संघ ने यही मार्ग अपनाया है। लेकिन यह एक दीर्घकालीन प्रक्रिया है क्योंकि आदर्श कोई आकस्मिक घटना नहीं, बल्कि उतार-चढ़ावों से भरी एक लंबी यात्रा की अंतिम मंजिल है। वर्तमान युग की प्रतिकूल परिस्थितियों में यह कार्य और भी कठिन हो जाता है लेकिन कठिन होने के कारण करने योग्य कार्य को न करना कायरता है। ऐसी कायरता ही इस प्रक्रिया का अंग बनने की बजाय इसे कोरा आदर्शवाद बताकर पिंड छुड़ाने का प्रयत्न करती है। लेकिन जिनको अपने आदर्शों की सत्यता में पूर्ण विश्वास और निष्ठा है वे बिना विचलित हुए उन आदर्शों की ओर बढ़ते ही रहते हैं। यह सत्य है कि आदर्श की हांक में यथार्थ की बलि चढ़ाना पाखंड को जन्म देता है, लेकिन यह भी इतना ही सत्य है कि यथार्थ के नाम पर आदर्श को त्याग देना मनुष्यता को पाशविकता के स्थाई बंधन में बांधकर विकास का मार्ग बंद कर देना है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ न तो यथार्थ की उपेक्षा करता है, न ही आदर्श की यात्रा को अवरूद्ध होने देता है। संघ हमें हमारे यथार्थ से परिचित करा कर वहीं से प्रारंभ करके क्षात्रधर्म के उच्चतम आदर्श तक ले जाने की यात्रा करवाता है। आएं, हम भी अपने अहंकार को त्याग कर इस यात्रा के सहयात्री बनें।

मेवाड़ का गुहिल वंश

गुजरात के सुल्तान को जब नागौर में अपनी सेना के पराजित होने की सूचना मिली। पराजय से अपमानित सुल्तान कुतुबुद्दीन ने एक विशाल सेना के साथ चित्तौड़ पर आक्रमण किया। सुल्तान ने अपनी सेना की एक टुकड़ी को सेनापति मलिक शहबान को आबू की ओर भेजा और खुद कुम्भलगढ़ की ओर गया। मलिक शहबान ने आबू पर आक्रमण किया लेकिन मलिक खान को इस अभियान में करारी हार का सामना करना पड़ा। उसकी अधिकांश सेना इस युद्ध में नष्ट हो गई। पराजित शरबान की करारी हार का समाचार जब कुम्भलगढ़ की ओर जाते सुल्तान शहबुद्दीन को मिला, तो सुल्तान का मनोबल बुरी तरह गिर गया और वह महाराणा कुम्भा की शक्ति से भयभीत होकर वापिस गुजरात की और चल पड़ा।

जब सुल्तान वापिस राजधानी अहमदाबाद की ओर जा रहा था तब मार्ग में चम्पानेर नामक स्थान पर सुल्तान से मालवा के सुल्तान का दूत ताज खां आकर मिला व अपने मालिक महमूद की तरफ से उसने सुल्तान को एक प्रस्ताव दिया कि एक ओर मालवा मेवाड़ पर आक्रमण करेगा और दूसरी तरफ से गुजरात मेवाड़ पर आक्रमण करेगा दोनों की सम्मिलित शक्ति मेवाड़ को नष्ट कर देगी और फिर गुजरात से लगा दक्षिणी मेवाड़ गुजरात और शेष मेवाड़ मालवा को प्राप्त हो जावे। इस प्रकार का आहमनामा तैयार कर उस पर मालवा और गुजरात के प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर हुए जो इतिहास में चम्पानेर की संधि कहलाती है। अब गुजरात और मालवा ने युद्ध की तैयारियां शुरू की और अपनी पूरी शक्ति के साथ अलग-अलग दिशा से मेवाड़ पर आक्रमण किया किन्तु महाराणा कुम्भा ने दोनों को परास्त कर दिया। इस विजय के साथ ही मेवाड़ उत्तर भारत की सर्वोत्तम शक्ति बन गया। महाराणा कुम्भा के समय मेवाड़ ना केवल सामरिक रूप से सुदृढ़ हुआ वरन् उनका काल स्थापत्य ओर विद्योन्नति के लिए भी प्रसिद्ध है। महाराणा कुम्भा स्वयं शिल्प शास्त्र के ज्ञाता थे। उन्होंने मेवाड़ में छोटे-बड़े 32 दुर्गों का निर्माण करवाया, जिनमें कुम्भलगढ़ महत्वपूर्ण है। दुर्गों के अतिरिक्त महाराणा कुम्भा ने अनेक मंदिरों और जलाशयों का निर्माण करवाया जिनमें 'कुम्भस्वामी' और 'आदिवाराह' का मंदिर प्रमुख है। महाराणा कुम्भा स्वयं उच्च कोटि के विद्वान और विद्वानों के आश्रयदाता थे। उनके द्वारा रचित ग्रन्थ संगीत राज, संगीत मीमांसा, सुड प्रबंध, गीत गोविन्द की रसिक प्रियतीका, चण्डी शतक की व्याख्या, अलग-अलग भाषाओं में लिखे नाटक उन्हें किसी भी युग के श्रेष्ठ साहित्यकारों की पंक्ति में ला खड़ा करते है। एकलिंग महात्म्य बताता है कि कुम्भा वेद, स्मृति, मीमांसा, उपनिषद, राजनीति, व्याकरण, संगीत सभी में निपुण थे। उनके दरबार में कवि अत्रि, महेश, कान्हा व्यास, मण्डन आदि आश्रय पाते थे। महाराणा कुम्भा के वीरूद राणौरासो, दानगुरु, चापगुरु, राजगुरु, अभिनव भट्टाचार्य, हिन्दू सुरत्राण, उनकी श्रेष्ठता को सिद्ध करते है।

(क्रमशः)

युनिवर्सिटी टॉप करने पर निर्मल कंवर सम्मानित

संघ के स्वयंसेविका निर्मल कंवर बैण्याकाबास को द आई आई एस विश्वविद्यालय (डीम्ड टू बी) के मास्टर ऑफ कॉमर्स फाइनेंशियल स्टडीज विभाग में टॉप करने पर 12 अप्रेल को लोकसभाध्यक्ष माननीय ओम बिरला द्वारा सम्मानित किया गया। निर्मल कंवर वयोवृद्ध स्वयंसेवक दीपसिंह जी बैण्याकाबास की पौत्री व संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह जी बैण्याकाबास की पुत्री है।

हीर्दयांक्षी शेखावत ने जिला स्तर पर जीता स्वर्ण पदक

जयपुर में आयोजित जयपुर जिला गोजू-रयू (करांटे के समकक्ष) चैंपियनशिप 2023 प्रतियोगिता में हृदयांशी शेखावत पुत्री रजत सिंह शेखावत झाझड़ ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया। हृदयांशी श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक चंदन सिंह चादेसरा की दोहिती है। इनकी माताश्री कीर्ति सिंह चादेसरा ने भी संघ के 18 शिविर कर रखे हैं एवं श्री दुर्गा महिला छात्रावास सीकर की विद्यार्थी रही है।

भवानी सिंह जाखल ने ऑस्ट्रेलिया में जीता रजत पदक

ऑस्ट्रेलिया के पर्थ में 15 से 21 अप्रैल तक आयोजित वर्ल्ड ट्रांसप्लांट गेम्स में झुंझुनूं जिले के जाखल गांव निवासी भवानी सिंह शेखावत ने 15 अप्रैल को पेटांक सिंगल गेम में रजत पदक जीता। वर्ल्ड ट्रांसप्लांट गेम्स में पदक जीतने वाले राजस्थान के पहले खिलाड़ी भवानी सिंह ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं विशेष रूप से स्प्रिंग बोर्ड अकादमी और उसके निदेशक दिलीप सिंह महेचा का आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस खेल में मेरे प्रायोजक की भूमिका निभायी और आर्थिक सहयोग किया। इन खेलों में लगभग 60 देशों के 2500 खिलाड़ी भाग ले रहे हैं। इन खेलों का एकमात्र उद्देश्य पूरे विश्व में अंग दान की मुहिम को प्रोत्साहित करना है। उल्लेखनीय है कि भवानी सिंह को भी 15 वर्ष पूर्व उनके पिता घनश्याम सिंह ने अपनी किडनी दी थी। भवानी सिंह अभी राजस्थान स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत है।

प्रज्ञा सिंह राघव का नासा में चयन

उत्तरप्रदेश के बुलंदशहर जिले के पहासू क्षेत्र के बनैल गांव की मूल निवासी प्रज्ञा सिंह राघव का चयन अमेरिका के ह्यूस्टन स्थित नासा के ल्यूनरर्ड प्लेनेटरी इंस्टिट्यूट में रिसर्च के लिए हुआ है। प्रज्ञा वर्तमान में चेन्नई स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में तृतीय वर्ष की छात्रा है एवं उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से इलेक्ट्रॉनिक कम्युनिकेशन में बीटेक किया है। इनके पिता चमन सिंह राघव अध्यापक है।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	उ.प्र.शि. (पुरुष)	18.05.2023 से 29.05.2023 तक	**भवानी निकेतन,** जयपुर। 18 मई को प्रातः 8 बजे तक शिविर स्थल पर पहुंचना है। पूर्व में 2 प्रा.प्र.शि. व 1 मा.प्र.शि. किए हुए हों तथा दसवीं की परीक्षा दी हुई हो। पूरा शिविर नहीं करने वाले 23 मई को पूर्व अनुमति लेकर आ सकेंगे। 29 मई से पूर्व जाने की स्वीकृति नहीं होगी। शिविर शुल्क प्रति शिविरार्थी 100 रुपये शिविर में देय होगा। निर्देशिका, झनकार, मेरी साधना व साधना पथ पुस्तकें तथा निर्देशिका में शिविर हेतु वर्णित सामग्री साथ लेकर आनी है। सायंकालीन प्रार्थना की गणवेश धोती, कुर्ता व केशरिया साफा होगी एवं प्रातःकालीन प्रार्थना में संघ की गणवेश अनिवार्य होगी।
02.	मा.प्र.शि. (मातृशक्ति)	23.05.2023 से 29.05.2023 तक	**भवानी निकेतन,** जयपुर। **नोटः-** पूर्व में न्यूनतम दो शिविर किए हुए हों। दसवीं की परीक्षा दी हुई हो। शिविर शुल्क प्रति शिविरार्थी 50 रुपये शिविर में देय होगा। निर्देशिका में शिविर हेतु वर्णित सामग्री एवं संघ की गणवेश साथ लेकर आनी है। सायंकालीन प्रार्थना में यथासंभव परंपरागत केशरिया (लहंगा ओढणी या साड़ी) गणवेश लेकर आयें। विवाहित महिलाएं वे ही शामिल हो सकेंगी जिनको आमंत्रित किया जाएगा। बालिकाओं के साथ आने वाले व वापस लेकर जाने वाले स्वयंसेवकों को भी पूर्व अनुमति लेना आवश्यक होगा एवं उनकी भी गणवेश आवश्यक है।
03.	**दम्पति (शिविर)**	08.06.2023 से 11.06.2023 तक	**आलोक आश्रम, बाड़मेर।** 1. दम्पति में से किसी एक के श्री क्ष.यु.सं. का शिविर किया हुआ हो। 2. महिला व पुरुष दोनों के लिए गणवेश आवश्यक है। 3. शिविर फीस 100/- (प्रति व्यक्ति) रुपए व भोजन शुल्क 150/- रुपए (प्रति व्यक्ति, प्रतिदिन) शिविर में देय है। 4. 8 जून को सुबह 8.00 बजे तक पहुंचें। 5. आने वाले 10 मई तक शिविर कार्यालय को सूचित करें।

दीपसिंह बैण्यकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

गांधीनगर स्नेहमिलन हेतु विभिन्न गांवों में संपर्क यात्राओं का आयोजन

गुजरात की राजधानी गांधीनगर में 30 अप्रैल को माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास के सान्निध्य में आयोजित होने वाले स्नेहमिलन कार्यक्रम की तैयारियों के क्रम में गांधीनगर जिले के विभिन्न गांवों में संपर्क यात्राओं का आयोजन किया गया एवं प्रत्येक उस गांव में, जहां राजपूत रहते हैं, पहुंचकर श्री क्षत्रिय युवक संघ और पूज्य श्री तनसिंह जी का संदेश पहुंचाया गया। संपर्क यात्रा का प्रारंभ 13 अप्रैल को पडुस्मा और समौ गांव में संपर्क के साथ हुआ। मध्य गुजरात संभाग प्रमुख अणदुभा काणेटी सहयोगियों सहित यात्रा में उपस्थित रहे। 15 अप्रैल को दो दल बनाकर पींपणज, पिंडारड़ा, गलथरा, अलुवा, अमरापुर, माणेकपुर, लिंबोद्रा, अंबोड, रंगपुर, लाकरोडा, वरसोडा,

रिद्रोल, आंजोल, माणसा सहित चौदह गांवों में संपर्क किया गया, जिसमें महावीर सिंह हरदास का बास, इंद्र सिंह पडुस्मा एवं प्रांत प्रमुख प्रमुख दिग्विजय सिंह पलवाडा उपस्थित रहे। 16 अप्रैल को चार दल बनाकर ईटादरा, बोरु, खाटाआंबा, पारसा, वेड़ा, पलियड, जांमणा, सोंजा, बालवा, चांदीसणा, वगोसण, नवा, नारदिपुर, नारोला, वडस्मा, बिलोदरा, टिंटोदण, मोतीपुरा, हरणाहोडा, रामपुरा, परबतपुरा, भोयण राठोड़, जलुंद, धमोसणा, पानसर, डिंगुचा, खोरज, डाभी आदि 27 गांवों में संपर्क यात्रा की गई। 19 अप्रैल को उनावा, वासणिया महादेव, महुंन्द्रा और मंगोड़ी गांव में संपर्क यात्रा की गई जिसमें भरत सिंह कुकराणा, विजय सिंह काणेटी, अनिरुद्ध सिंह काणेटी ने समाजबंधुओं को कार्यक्रम की जानकारी देकर आमंत्रित किया। 20 अप्रैल को धणप, सादरा, चेखला राणी, दोलाराणा, वासणा, धरमपुर, पार्लज आदि गांवों में संभाग प्रमुख अणदुभा काणेटी व अन्य सहयोगियों ने संपर्क किया। 21 अप्रैल को कांढा, गोलथरा और देलवाड में संपर्क यात्रा की गई जिसमें हरिसिंह समौ, करणसिंह पडुस्मा, पुष्पराजसिंह आदि उपस्थित रहे। 22 अप्रैल को श्री कच्छ काठियावाड़ राजपूत सेवा समाज गांधीनगर संचालित बा श्री दशरथबा महेंद्रसिंह जी परमार राजपूत आईएएस कैरियर एकेडमी लेकावाडा में बैठक की गई एवं बासण, सरगासण, कोलवडा आदि गांवों में संपर्क किया गया। इस दौरान कच्छ प्रांत प्रमुख वनराजसिंह भैंसाणा और चरोतर प्रांत प्रमुख अरविंद सिंह काणेटी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। 23 अप्रैल को तीन दल बनाकर नांदोल, वडवासा, उदण, भादरोडा, अहमदपुरा, दहेगांम, वासणा राठोड, कडादरा, जलुंन्द्रा, सोलंकी पुरा, गलुदण, लेकावाडा, ग्रीन सिटी, सेक्टर 26 (गांधीनगर), आदिवाडा, पेथापुर में संपर्क यात्रा की गई जिसमें जगतसिंह वलासणा, बटुकसिंह काणेटी आदि उपस्थित रहे।

(पृष्ठ एक का शेष)

सामाजिक पुकार...

ऐसा करते-करते उन्होंने एक ऐसा मार्ग बना दिया जिस मार्ग पर चलकर कोई भी व्यक्ति उस स्थान तक पहुंच सकता है, जहां पर पूज्य तनसिंह जी पहुंचे। उन्होंने कहा कि जिसको मार्ग बनाना पड़ता है, उसे अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं क्योंकि वह दुरूह और कठिन कार्य है, उसमें संघर्ष करना पड़ता है और उसमें समय भी लगता है। लेकिन यदि बने-बनाए मार्ग पर चलना हो तो केवल उस मार्ग की जानकारी होनी चाहिए और उस पर चलने का संकल्प चाहिए, तो हम गंतव्य पर पहुंच जाएंगे। हमारे लिए पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में ऐसा ही एक राजमार्ग बनाया है, जिस पर चलकर हम जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में 14 अप्रैल को चेन्नई स्थित राजस्थान राजपूत सभा भवन में स्नेहमिलन आयोजित हुआ। यहां उन्होंने कहा कि यह हमारे खून की विशेषता है कि हम जिस क्षेत्र में भी जाएंगे उसमें अपना परचम फहरा देंगे। लेकिन हम किस दिशा में आगे बढ़ कर अपना परचम फहराना चाहते हैं, यह चिंतन का विषय है। क्या हम सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं? क्या हमारा आगे बढ़ना हमारे क्षत्रियत्व को पुष्ट कर रहा है? इन सब बातों पर हमें विचार अवश्य करना चाहिए। स्वयं का निर्माण किए बिना यदि हम संसार का निर्माण करना चाहते हैं, तो वह कभी संभव नहीं है। जिस ज्ञान को हम अपने आचरण में नहीं उतारते, उस ज्ञान को दूसरों को हम कभी प्रदान

नहीं कर सकते। इसीलिए संघ सर्वप्रथम हमें स्वयं के निर्माण के लिए प्रेरित करता है। 15 अप्रैल को विजयवाड़ा स्थित बाबा रामदेव मंदिर में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि जो व्यक्ति श्रेष्ठ माना जाता है अन्य लोग उसके आचरण को देखकर वैसा ही आचरण करते हैं। इसलिए श्रेष्ठ माने जाने वाले व्यक्तियों को अपने आचरण को लेकर अत्यधिक सावधान रहने की आवश्यकता है। क्षत्रिय को सदैव श्रेष्ठ माना जाता है और हमने भी क्षत्रिय कुल में जन्म लिया है तो हमें भी अपने आचरण को श्रेष्ठ बनाना होगा। यदि हम अनुचित और अनैतिक आचरण करेंगे तो हमें देखकर अन्य लोग भी वैसा ही आचरण करेंगे। इसीलिए संघ हमें हमारी श्रेष्ठता का भान करवा रहा है और हमें उसी के अनुरूप आचरण करने के लिए प्रेरित कर रहा है। लेकिन श्रेष्ठता केवल भाषण अथवा उपदेशों से नहीं आती। उसके लिए साधना करनी पड़ती है, अपने आप को तपाना पड़ता है, कष्ट सहन करने पड़ते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी ऐसी ही साधना का मार्ग है। 16 अप्रैल को हैदराबाद स्थित महाराणा प्रताप हॉल, अंबरपेट में संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आज सारे संसार का वातावरण विषमय हो गया है, ऐसे में हमारे ऊपर भी उसका असर हुए बिना रह नहीं सकता, क्योंकि हम भी इस संसार में रहते हैं। जैसे वातावरण में हम रहेंगे, उसका असर हम पर होता ही है, यह एक वैज्ञानिक तथ्य है। आज हमारी संस्कृति पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव में आकर दूषित हो गई है। पश्चिमी संस्कृति की नकल करके हम अपने घरों में उसका प्रवेश करा रहे हैं और हम इस प्रवेश को चाह कर भी रोक नहीं पा रहे हैं। इसका कारण है हमारे संकल्प का कमजोर हो जाना। संकल्प को मजबूत बनाने के लिए जिस शिक्षण की आवश्यकता है, जिस संस्कार प्रक्रिया की आवश्यकता है, वह भारत से लुप्तप्रायः हो गई है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ उस कमी को पूरा करने का प्रयास कर रहा है। वह अपने शिविरों में कृत्रिम रूप से ऐसे वातावरण का निर्माण करता है, जिसमें क्षत्रियत्व का शिक्षण दिया जा सके। माननीय संघप्रमुख श्री ने सभी कार्यक्रमों में पधारे हुए समाज बंधुओं एवं मातृशक्ति को दिल्ली में होने वाले पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह में सम्मिलित होने हेतु आमंत्रण दिया।

प्रांजल राणावत की एनडीए परीक्षा में दूसरी रैंक

चितौड़गढ़ जिले के मेडी खेड़ा गांव की निवासी प्रांजल राणावत पुत्री मनीष देव सिंह ने संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर दूसरा स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने अपनी इस सफलता से परिजनों और जिलेवासियों को गौरवान्वित किया है।

श्याम सत्यवीर सिंह का सीडीएस परीक्षा में चयन

जोधपुर जिले के शेरगढ़ क्षेत्र के डेरिया गांव निवासी श्याम सत्यवीर सिंह का भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट पद हेतु चयन हुआ है। इन्होंने संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित संयुक्त रक्षा सेवा (सीडीएस) परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर 85वां स्थान प्राप्त करके परिजनों एवं क्षेत्रवासियों को गौरवान्वित किया है।

(पृष्ठ एक का शेष)

लोकतंत्र...

हम नेताओं को दोष देते हैं कि ये कुछ नहीं करते, लेकिन क्या हम खुद सही हैं, क्या हम लोकतंत्र के अनुरूप सच्चे नागरिक बन सके हैं? सच्चा नागरिक अपना हित नहीं सोचता बल्कि अपने परिवार, गांव और पूरे देश का हित सोचता है। क्या हम इस भावना को अपने जीवन में उतार चुके हैं? यदि नहीं तो नेताओं को दोष देने का क्या लाभ है? उपर्युक्त बात श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने 16 अप्रैल को जालौर के मलकेश्वर मठ में आयोजित किसान सम्मेलन को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि नेताओं को हम ही चुनकर भेजते हैं। हम क्यों उस समय यह ध्यान नहीं रखते कि ऐसा नेता भेजें जो सर्व समाज के लिए काम करें, राष्ट्र के विकास के लिए काम करें। आज विकास की परिभाषा भी बदल गई है। भौतिक साधन ज्यादा पैदा हो, इसको हम विकास मानते हैं फिर चाहे इंसान दुष्ट बन जाए, स्वार्थी बन जाए उसकी परवाह नहीं है।

आज घर-घर में परिवार आपस में लड़ रहे हैं, क्योंकि सब स्वार्थी बन गए हैं। इस निज स्वार्थ को छोड़कर सबके हित की बात सोचना शुरू करेंगे तो वही दायित्वबोध की बात होगी। इसलिए लोकतंत्र में हम सही नागरिक बन सकें, उस ओर हमको अपने जीवन को ढालना है लेकिन वह आसानी से नहीं ढलता, कहने से भी नहीं ढलता, पुस्तक पढ़ने से भी नहीं ढलता, किसी के उपदेश सुनने से भी नहीं ढलता, अपने खुद के प्रयास से ढलता है। उसके लिए त्याग चाहिए। इसलिए आत्मावलोकन करें, अपने आपको तोलें कि हम क्या सही कर रहे हैं और क्या गलत कर रहे हैं। राष्ट्र में यदि दायित्व बोध पैदा करना चाहते हैं तो सबसे पहले हमको अपने उत्तरदायित्व को समझना पड़ेगा। जहां भी कोई कमी दिखती है, अभाव दिखता है, उसे हम दूर करें। यह हम सबका दायित्व हैं, ऐसा संकल्प लेकर यदि हम काम कर सके तो ही ऐसे सम्मेलनों के आयोजन की सार्थकता होगी। इससे पूर्व कार्यक्रम के आयोजन की भूमिका बताते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने कहा कि भारतीयता सदैव दायित्व बोध की बात करती है और उसी दायित्व बोध को जागृत करने के उद्देश्य से पूज्य श्री तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। वर्षों की गुलामी के बाद जिस नई व्यवस्था के तहत देश जा रहा था, उस व्यवस्था में इस देश की दिशा क्या होगी, यह प्रश्न पूज्य श्री तनसिंह जी के मन में चल रहा था और उसी प्रश्न की उपज है - श्री क्षत्रिय युवक संघ। पूज्य श्री का मानना था कि दायित्व बोध ही हमारी भारतीय संस्कृति का आधार रहा है। पूरी भारतीयता दायित्व बोध में छुपी हुई है। दायित्व बोध का अर्थ है अपने कर्तव्य का भान। इसलिए भारत में कभी अधिकार की बात नहीं की जाती, भारत प्रारंभ से ही दायित्व बोध की बात करता है। उस दायित्व बोध के अभाव में भारत भारत नहीं रहता। पूज्य तनसिंह जी की यही चिंता थी कि इस दायित्व बोध को जागृत किए बिना भारत का क्या होगा? वेद का एक वाक्य है - विश्वात्मा के दृष्टिकोण से तुम्हारी कहां आवश्यकता है उसको पहचानो और तुरंत उस आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए तत्पर हो जाओ और यदि उसे पूर्ण करने की क्षमता नहीं है तो उस क्षमता को अर्जित करने में तत्पर हो जाओ। पूज्य तनसिंह जी ने उस वेद वाक्य को आधार बनाकर उस क्षमता को अर्जित करने की प्रक्रिया प्रारंभ की, वही प्रक्रिया श्री क्षत्रिय युवक संघ है। उन्होंने बताया कि समाज के सभी वर्गों में इस दायित्व बोध को जागृत करने के लिए किए जाने वाले प्रयासों के क्रम में ही इन किसान सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में नवा राम (भोपाजी), बद्रीदान चारण, सूजा राम प्रजापत, मुकेश सोलंकी, रमेश राणा, ललित दवे, गणेशा राम चौधरी, उदा राम वैष्णव, पीरा राम धायल, भमरा राम सेन, भंवरलाल सुथार आदि ने भी अपने विचार रखे। नाहर सिंह जाखडी ने 14 सूत्री किसान मांग पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने किया। कार्यक्रम के पश्चात किसानो की मांगों को लेकर एक प्रतिनिधिमण्डल द्वारा प्रशासन को मांग पत्र सौंपा गया। सम्मेलन में आए हजारों किसानों को यथार्थ गीता पुस्तक का वितरण भी किया गया। विभिन्न वर्गों के किसानों द्वारा श्री प्रताप फाउंडेशन की इस पहल की प्रशंसा की गई। उन्होंने कहा कि राजनीतिक विचारधारा और जाति, धर्म की सीमाओं को नकारकर संपूर्ण किसान वर्ग को जोड़ने की बात करना वास्तव में सराहनीय है। कार्यक्रम में सिरोही विधायक संयम लोढ़ा, जालोर विधायक जोगेश्वर गर्ग, रानीवाड़ा विधायक नारायण सिंह, आहोर विधायक छगन सिंह राजपुरोहित, प्रदीप सिंह सियाणा, पूर्व राज्य मंत्री ओटा राम देवासी , पूर्व राज्य मंत्री भूपेंद्र देवासी, पूर्व जिला प्रमुख मंजू मेघवाल, जिला प्रमुख राजेश राणा, रविन्द्र सिंह बालावत, सुमेर सिंह धानपुर, लाल सिंह धानपुर, सायला प्रधान ढोंमी देवी, किसान नेता बजरंग सिंह राठौड़, हिंदू सिंह दुठवा, किसान नेता विक्रम सिंह पुनासा, श्रवण सिंह दासपा, गणपत सिंह राठौड़, विशन सिंह कैलाश नगर सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

सफलता असफलता..

इसलिए राजनीतिक क्षेत्र में एक होकर मतदान करने की आवश्यकता है, साथ ही हमारी एकता की बात राजनीतिक दलों तक पहुंचानी भी आवश्यक है। श्री प्रताप फाउंडेशन के माध्यम से समाज में ऐसी जागृति लाने का कार्य किया जा रहा है। यदि आपको शासन में नहीं रहना अच्छा नहीं लगता है तो शासन करने के योग्य बनें। जब हममें यह योग्यता थी तब हमारे अतिरिक्त किसी अन्य का शासन लोग स्वीकार ही नहीं करते थे। योग्य हम बनना नहीं चाहते और अधिकार प्राप्त करना चाहते हैं, यह ठीक नहीं है। इसलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ अधिकार की मांग करने की बात नहीं करता, बल्कि कर्तव्य पालन की बात करता है। गीता भी कहती है कि कर्म करना हमारा अधिकार है, फल पर हमारा अधिकार नहीं है। हम चिंता इतनी ही करें कि हमारे प्रयत्न में कोई कमी ना रहे, हम किसी के भरोसे ना बैठे रहे। कर्मशील हुए बिना तबाही नहीं मिटती है। आज चारों ओर जो तबाही मच रही है, उसे रोकने के लिए हमें कर्मशील होना पड़ेगा। संरक्षक श्री ने जन्म शताब्दी वर्ष के बारे में बताते हुए कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तन सिंह जी का जन्म शताब्दी वर्ष 2023-24 में मनाया जा रहा है। उनकी सौवीं जयंती पर राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में भव्य कार्यक्रम आयोजित होगा, जिसके लिए मैं आप सब को आमंत्रित करता हूं।

शिक्षाविद कमल सिंह महेचा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि किसी भी देश के उत्थान एवं उन्नति के प्रतीक उसका इतिहास एवं संस्कृति होते हैं। जिस देश का इतिहास व संस्कृति नष्ट हो जाए वह देश भी नष्ट हो जाता है। ऐसा ही कार्य कुछ समय से अपने देश में कुछ तत्व करने का प्रयास कर रहे हैं, चाहे वह फिल्मों के माध्यम से या सोशल मीडिया के माध्यम से। यह गलत है और इसका हमें विरोध करना चाहिए। हमें अपनी विरासत को संजो कर रखना है और इसे तोड़ने वाली ताकतों का पुरजोर विरोध संगठित होकर करना है। उन्होंने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ आजादी के बाद समाज का पहला ऐसा संगठन है जिसने संपूर्ण देश में क्षत्रिय गुणों को स्थापित कर समाज को जागृत करने का प्रयास किया है। संघ के साथ जुड़कर हमें अपने आत्मसम्मान व आत्मगौरव की रक्षा करनी है, साथ ही समाज में कुरीतियों को दूर कर शिक्षा की ज्योत जलानी है। जिला शिक्षा अधिकारी कृष्ण सिंह राणीगांव ने 'समाज, संघ और हम, समाज की प्रतिभाओं के प्रोत्साहन में हमारा योगदान' विषय पर बात रखते हुए आर्थिक रूप से पिछड़ी बालिकाओं के लिए जिला स्तर पर आवासीय विद्यालय की स्थापना एवं आर्थिक रूप से कमजोर बालक-बालिकाओं को गोद लेकर उनकी संपूर्ण शिक्षा की व्यवस्था करने हेतु प्रतिभा प्रोत्साहन कमेटी बनाने की बात कही। मदन सिंह चूली द्वारा कार्यक्रम की भूमिका बताई गई। संतोष कंवर बरड़वा ने समाज में 'बालिका शिक्षा की वर्तमान स्थिति, हमारी अपेक्षाएं और प्रयास' विषय पर विचार रखे। कमल सिंह भैसड़ा द्वारा 10वीं एवं 12वीं के बाद विषय चयन व रोजगार के अवसरों के बारे में बताया गया। कान सिंह खारा ने ईडब्ल्यूएस आरक्षण सुविधा की जानकारी देते हुए उसके सदुपयोग के बारे में बताया। पर्वत सिंह ढींढस ने शारीरिक शिक्षा में रोजगार की संभावनाएं एवं नए खेलों के बारे में जानकारी दी। कमल सिंह राणीगांव द्वारा विभिन्न छात्रवृत्तियों के बारे में जानकारी दी गई। बाल सिंह मारूडी ने शिक्षक एवं राजनीति विषय पर अपनी बात रखी। वीर सिंह सोढा (मयूर नोबल्स) द्वारा विज्ञान संकाय में एवं तेज सिंह द्वारा कृषि संकाय में भविष्य के बारे में जानकारी दी गई। कार्यक्रम के अंतिम सत्र में उपस्थित शिक्षक-शिक्षिकाओं ने अपनी ओर से अनेक सुझाव दिए एवं विभिन्न विषयों पर अपनी बात रखी। कार्यक्रम के दौरान माननीय संरक्षक श्री द्वारा कमल सिंह महेचा को शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु राजस्थानी भाषा में छपा सम्मान पत्र भेंट किया गया। कार्यक्रम में बाड़मेर, जैसलमेर और बालोतरा के 1157 शिक्षकों ने भाग लिया। रेवंत सिंह राणासर, पदम सिंह लुणु, तन सिंह एवं रावत सिंह महेचा, सोहन सिंह जालीपा, श्याम सिंह गिराब, मनोहर सिंह बावड़ी, अनोप सिंह रेडाणा, मोहन सिंह देदूसर तथा माइलस्टोन अकैडमी द्वारा कार्यक्रम की व्यवस्था में सहयोग दिया गया।

असम के पूर्व राज्यपाल ले. जनरल अजय सिंह का निधन

असम के पूर्व राज्यपाल ले. जनरल अजय सिंह (पीवीएसएम, एवीएसएम) का निधन 17 अप्रैल को दिल्ली में हो गया। कोटा जिले में स्थित कुनाड़ी कोटा के मूल निवासी अजय सिंह 2003 से 2008 तक असम के राज्यपाल एवं उत्तर-पूर्वी परिषद के अध्यक्ष रहे। वे एक अनुभवी योद्धा, कुशल रणनीतिकार, योग्य प्रशासक और लोकप्रिय सेनानायक के रूप में जाने जाते हैं।

गणपत सिंह अवाय को भ्रातृशोक

राणीदान सिंह अवाय

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक गणपत सिंह अवाय के बड़े भाई **राणीदान सिंह जी अवाय** (सेवानिवृत्त अध्यापक) का निधन 19 अप्रैल 2023 को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

प्रताप सिंह गुड़ा को मातृशोक

श्रीमती छगन कंवर

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक प्रताप सिंह गुड़ा की माता **श्रीमती छगन कंवर** का देहावसान 12 अप्रैल 2023 को हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

माननीय संरक्षक श्री का नागौर, सीकर व जयपुर प्रवास

माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर 20 से 23 अप्रैल की अवधि में नागौर, सीकर और जयपुर जिलों के प्रवास पर रहे। 20 अप्रैल को संरक्षक श्री बाड़मेर से रवाना होकर नागौर पहुंचे। यहां जब्बर सिंह खारीकर्मसोतां के आवास पर नागौर प्रांत के स्वयंसेवकों से भेंट की। संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा ने संभाग में हो रही सांघिक गतिविधियों एवं पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी संरक्षक श्री को दी। नागौर से माननीय संरक्षक श्री सीकर के लिए रवाना हुए तथा मार्ग में डीडवाना में भाजपा नेता जितेंद्र सिंह जोधा के आवास पर रुक कर डीडवाना के स्वयंसेवकों एवं समाजबंधुओं से भेंट की। यहां से रवाना होकर आप सीकर स्थित दुर्गा महिला विकास संस्थान पहुंचे तथा संस्थान में हो रही गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। सीकर से माननीय संरक्षक श्री ने चिराणा पहुंचकर रात्रि विश्राम किया। 21 अप्रैल को माननीय संरक्षक श्री गुड़ा पहुंचे एवं वहां पर साथी स्वयंसेवक प्रतापसिंह गुड़ा की माता जी के देहावसन पर संवेदन प्रकट की। यहां से जयपुर के लिए प्रस्थान किया एवं भवानी निकेतन प्रांगण में राजस्थान विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ के जन्म दिवस के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में शिरकत की। संघशक्ति में रात्रि विश्राम के पश्चात 22 अप्रैल को जयपुर से रवाना होकर माननीय संरक्षक श्री कुचामन सिटी (नागौर) पहुंचे। यहां स्थानीय कार्यालय आयुवान निकेतन में संघ के स्वयंसेवकों एवं संघ के आनुषंगिक संगठनों के कार्यकर्ताओं से मुलाकात की। संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा, साधना संगम संस्थान के अध्यक्ष बाबू सिंह नगवाड़ा, कार्यालय प्रभारी भगवत सिंह सिंघाना सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। यहां रात्रि विश्राम के पश्चात 23 अप्रैल को माननीय संरक्षक श्री आसरवा गांव पहुंचे। यहां जलपान एवं समाजबंधुओं से भेंट करने के पश्चात जोधपुर पहुंचे। जोधपुर में स्वयंसेवकों से भेंट कर बाड़मेर हेतु प्रस्थान किया।

कनाडा में क्षत्रिय प्रवासी परिवारों का स्नेहमिलन

कनाडा के ओंटारियो शहर में रहने वाले क्षत्रिय प्रवासी परिवारों का स्नेहमिलन समारोह क्षत्रिय वेलफेयर सोसाइटी द्वारा 22 अप्रैल को आयोजित किया गया। समारोह में सभी समाजबंधुओं ने आपस में परिचय किया एवं अपने सामाजिक भाव को सुदृढ़ करने के लिए निरंतर ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन की आवश्यकता बताई। समारोह में पारंपरिक वेशभूषा में सांस्कृतिक नृत्य की प्रस्तुति भी दी गई। अंत में सभी ने स्नेहभोज का आनन्द लिया।

सिरोसी माता मंदिर की प्रथम वर्षगांठ पर स्नेहमिलन का आयोजन

सियाणा के निकट नबी गांव में वैशाख सुदी पंचमी को बोडा चौहानों की आराध्य देवी सिरोसी माता मंदिर की प्रथम वर्षगाँठ पर स्नेहमिलन एवं ध्वजारोहण कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कटकेश्वर महादेव मठ मायलावास के महन्त कुलदीप भारती जी के सान्निध्य में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ सियाणा ठाकुर प्रदीप सिंह चौहान द्वारा ध्वाजारोहण किया गया। मंगल आरती के पश्चात उपस्थित समाजबंधुओं व भक्तों ने भोजन प्रसादी ग्रहण की। वर्षगांठ की पूर्व संध्या पर भजन-कीर्तन का कार्यक्रम भी रखा गया जिसमें ख्यातिनाम कलाकारों द्वारा प्रस्तुतियां दी गई। नैन सिंह चाँदणा एवं ईश्वर सिंह आडवाड़ा ने व्यवस्था में सहयोग किया। इस अवसर पर जगतावर सिंह चांदना, प्रेम सिंह नारणावास, देवी सिंह काणदर, जनक सिंह सियाणा, भंवर सिंह आडवाडा, भरत सिंह नागणी सहित सैकड़ों की संख्या में समाजबंधु व क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

पाली जिले की एक दिवसीय जनप्रतिनिधि कार्यशाला संपन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ के आनुषंगिक संगठन श्री प्रताप फाउंडेशन के तत्वावधान में पाली जिले की एक दिवसीय जनप्रतिनिधि कार्यशाला का आयोजन 15 अप्रैल को पाली शहर स्थित झाला उपवन में हुआ। श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था एक श्रेष्ठ शासन प्रणाली है, लेकिन फिर भी भारत में इस व्यवस्था की श्रेष्ठता प्रकट नहीं होती, क्योंकि भारत में रहने वाले नागरिक लोकतंत्र की भावना के अनुरूप व्यवहार नहीं करते। हम व्यक्तिगत अथवा जातिगत स्वार्थों में उलझ जाते हैं और राष्ट्र के प्रति दायित्व भूल जाते हैं। भारत विकास की गति वास्तव में तभी पकड़ेगा जब हम नागरिक अपनी जिम्मेदारियों को समझेंगे। इसलिए मतदाताओं को राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को समझते हुए मतदान करने की आवश्यकता है। साथ ही, समाज के युवाओं को अधिक से अधिक वोटर लिस्ट में नाम जुड़वा कर मतदान प्रक्रिया में सहभागी बनना चाहिए। उन्होंने श्री प्रताप फाउंडेशन की स्थापना की पृष्ठभूमि, इसके उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से जानकारी दी। पाली जिले की सभी पंचायत समितियों से पधारे जनप्रतिनिधि सम्मिलित हुए। सभी जनप्रतिनिधियों ने चुनाव में समाज के लोगों द्वारा अधिक से अधिक संख्या में मतदान करने की बात कही, जिससे मजबूत लोकतंत्र के निर्माण में राजपूत समाज अपनी भूमिका निभा सके। आगामी विधानसभा एवं लोकसभा चुनावों को लेकर नीति तय करने के संबंध में भी चर्चा हुई। कार्यशाला के दौरान फाउंडेशन के पाली जिले की कार्ययोजना बनाकर विधानसभा एवं पंचायत समितिवार जिम्मेदारी ली गई। कार्यशाला में प्रताप सिंह बिंठिया, पाबू सिंह राणावत, समंदर सिंह आकड़वास, गुलाब सिंह गिरवर, छोटू सिंह, लक्ष्मण सिंह रायरा, भंवर सिंह सांडिया, प्रताप सिंह निंबली, चामुंड सिंह भाकरीवाला, करण सिंह चाणोद, नाहर सिंह जोधा, दातार सिंह आकोदिया, भरत सिंह भाकरीवाला, मानवेंद्र सिंह भाटी, प्रताप सिंह जोधा, नरपत सिंह, सुमेर सिंह राणावास, प्रभात कंवर, मनोहर कंवर, रेणु कंवर, राज कंवर सहित अनेकों जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org